Vol 5 Issue 11 Dec 2015

ISSN No : 2230-7850

International Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Mr. Dikonda Govardhan Krushanahari
Professor and Researcher ,
Rayat shikshan sanstha's, Rajarshi Chhatrapati Shahu College, Kolhapur.

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.org

ISSN: 2230-7850 Impact Factor : 3.1560(UIF) Volume - 5 | Issue - 11 | Dec - 2015

Indian Streams Research Journal

कबीर की भक्ति में आदर्श समाज का समावेश

मोहन सिंह नाथ
रा. इ. का. नारायण नगर सिनांई, जिला –चमोली गढवाल, (उत्तराखण्ड़)

मोहन सिंह नाथ

सारांश :–

कबीर एक ऐसी सख्शियत जिसने कभी शास्त्रा नही पढ़ा फिर भी ज्ञानियों की श्रेणी में सर्वोपरी है। कबीर एक ऐसा नाम जिसे फकीर भी कह सकते है। और समाज सुधारक भी, कबीर भले ही एक छोटा सा नाम हो पर ये भारत की वो आत्मा है जिसने रूढियों और कर्मकाण्डों से मुक्त भारत की रचना की है। हिन्दू, मुसलमान, ब्राहमण, शूद्र, धनी, निर्धन सबका वही एक प्रभु है। सभी की बनावट में एक जैसी हवा, खून, पानी का प्रयोग हुआ है। भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी, नींद सभी की जरूरतें एक जैसी है। सूरज प्रकाश और गर्मी सभी को समान रूप से देता है। वर्षा का पानी सभी के लिए है, हवा सभी के लिए है सभी एक ही आसमान के नीचे रहते है। इस तरह जब सभी को बनाने वाला ईश्वर, किसी के साथ भेद–भाव नही करता तो फिर मनुष्य–मनुष्य के बीच ऊँच–नीच, धनी–निर्धन, छुआ–छूत का भेद–भाव क्यों है? ऐसे ही कुछ प्रश्न कबीर दास जी के मन में उठते थे जिनके आधार पर उन्होंने मानव मात्रा को सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। कबीर ने अपने उपदेशों के द्वारा समाज में फैली बुराइयों का कड़ा विरोध किया और आदर्श समाज की स्थापना पर बल दिया। कबीर वो पहिचान है जिन्होंने जाति वर्ग की दीवार को गिराकर एक अद्धत संसार की कल्पना की।

प्रस्तावना :–

शोध विवेच्य शीर्षक का विवरण कुछ इस प्रकार है :–

मानवतावादी धर्म को बढ़ावा देने वाले कबीर दास जी का इस दुनियाँ में जन्म भी बडे अद्भुत प्रसंग के साथ हुआ माना जाता है। उनका जन्म सन् 1398 में ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन वाराणसी के निकट लहर तारा नामक स्थान पर हुआ था। यह भी कहा जाता है कि जगद् गुरू रामानन्द की दिव्य शक्ति एवं वरदान से कबीर का जन्म एक काशी की विधवा ब्राहमणी के गर्भ से हुआ था। विधवा ब्राहमणी ने लोक लाज की डर से नवजात शिशु को जन्म देते ही काशी के निकट लहर तारा नामक तालाब के पास फेंक आई।

कुछ कबीर पंथियों का मानना है कि परमात्मा की कृपा दृष्टि से संत कबीर का जन्म काशी के लहर तारा तालाब में कमल के मनोहर पुष्प के ऊपर बालक के रूप में हुई। उसी दिन नीमा नीरू संग ब्याह कर डोली में बनारस जा रही थी। बनारस के पास एक सरोवर पर कुछ विश्राम के लिए वे लोग रूके थे। अचानक नीमा को किसी बच्चे की रोने की आवाज सुनाई दी वो आवाज की दिशा में आगे बढ़ी। नीमा ने सरोवर में देखा कि एक बालक कमल पुष्प में लिपटा हुआ रो रहा है। नीमा ने जैसे ही बच्चे को गोद में लिया वो चुप हो गया। नीरू ने उसे साथ ले चलने को कहा किन्तु नीमा के मन में यह प्रश्न उठा कि परिजनों को क्या जबाव देगें। परन्तु बच्चे के स्पर्श से धर्म अर्थात कर्त्तव्य बोध जीता और बच्चे पर गहराया संकट टल गया। बच्चा बकरी का दूध पीकर बड़ा हुआ। छः माह का समय बीतने के बाद बच्चे का नामकरण संस्कार हुआ। नीरू ने बच्चे का नाम कबीर रखा। किन्तु कई लोगों को इस नाम पर एतराज था। क्योंकि उनका कहना था कि कबीर का मतलब महान होता है। एक जुलाह का बेटा महान कैसे हो सकता है? नीरू पर इसका कोई असर नही हुआ और बच्चे का नाम कबीर ही रहने दिया। ये कहना अतिसयोक्ति न होगा कि अनजाने में ही सही बचपन में दिया नाम बालक के बडें होने पर सार्थक सिद्ध हो

गया। अभावों के बावजूद भी नीरू और नीमा बहुत खुशी–खुशी जीवन यापन करने लगे।

कबीर को बचपन से ही साधु संगति बहुत प्रिय थी। कपड़ा बुनने का पैतृक व्यवसाय को आजीवन करते रहे। बाहय आडम्बरों के विरोधी कबीर निराकार ब्रहमा की उपासना पर जोर देते थे। बाल्यकाल से ही कबीर के चमत्कारिक व्यक्तित्व की आभा हर तरफ फैलने लगी। कहते है उनके बचपन में काशी में एक बार जलन रोग फैल गया था। उन्होंने रास्ते से गुजर रही बूढी महिला की देह पर धूल डालकर उसकी जलन दूर कर दी थी।

इनका विवाह लोई नाम की कन्या से हुआ था जिससे इनका एक पुत्रा कमाल तथा पुत्राी कमाली का जन्म हुआ।

बूढ़ा वंश कबीर का, उपाजा पूत कमाल।
हरि का सुमिरन छोड़ि के, घर ले आया माल।।

कबीर पढ़े–लिखे नही थे इसलिए उनका ज्ञान पुस्तकीय एवं शास्त्राीय नही था। उपने जीवन में उन्होंने जो अनुभव किया, जो साधना से पाया, वही उनका अपना ज्ञान था।

'मसि कागद छुयौ नाहि, कलम गहि नही हाथ'

जो भी ज्ञानी विद्वान उनके सम्पर्क में आते उनसे वे कहा करते थे –

'तू कहता कागद की लेखी, मैं कहता ऑखों की देखी'

सैकड़ों पोथियाँ (पुस्तकें) पढ़ने के बजाय वे प्रेम का ढाई अक्षर पढ़कर स्वयं को धन्य समझते थे।

कबिरा हरि के रूठते, गुरू के सरने जाय।
कहा कबीर गुरू रूठते, हरि नहिं होत सहाय।।

कबीर का बचपन बहुत सी जड़ताओं एवं रूढियों से जूझते हुए बीत रहा था। उस दौरान ये सोच प्रबल थी कि इन्सान अमीर है तो अच्छा है। बड़े रसूख वाला है तो और भी बेहतर है कोई गरीब है तो उसे इन्सान की तरह ही न माना जाय। आदमी–आदमी के बीच फर्क साफ नजर आता था। कानून और धर्म की आड़ में रसूखों द्वारा गरीबों और निम्न जाति के लोगों का शोषण किया जाता था। वे सदैव सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध थे और इसे कैसे दूर किया जाय इसी विचार में डूबे रहते थे।

कर्मकाण्ड कबीर को पसन्द नही थे। मस्जिदों में नमाज पढ़ना, मंदिरों में माला जपना, तिलक लगान, मूर्ति पूजा करना, रोजा या उपवास रखना आदि को कबीर आडम्बर समझते थे। कबीर सादगी से रहना, सादा भोजन करना पसन्द करते थे। बनावट उन्हें अच्छी नही लगती थी। अपने आस–पास के समाज को वे आडम्बरों से मुक्त बनाना चाहते थे। साधु–संतों के साथ कबीर इधर–उधर घूमने जाते रहते थे। इसी लिए उनकी भाषा में अनेक स्थानों की बोलियों के शब्द आ गये है। कबीर अपने विचारों और अनुभवों को व्यक्त करने के लिए स्थानीय भाषा के शब्दों का प्रयोग करते थे। कबीर की भाषा को 'सधुक्कड़ी' भी कहा जाता है। कबीर अपनी स्थानीय भाषा में लोगों को समझाते एवं उपदेश देते थे। जगह–जगह पर उदाहरण देकर अपनी बातों को लोगों के अन्तरमन तक पँहुचाने का प्रयास करते थे। कबीर की दृष्टि में गुरू का स्थान भगवान से भी बढ़कर है। एक स्थान पर उन्होंने गुरू को कुम्हार बताया है। जो मिट्टी के बर्तन के समान अपने शिष्य को ठोक–पीटकर सुघड़ पात्रा में बदल देता है।

गुरू कुम्हार शिष कुँभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़ै खोट।
अन्तर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट।।
गुरू बिन ज्ञान न उपजै, गुरू बिन मिलै न मोष।
गुरू बिन लखै न सत्य को, गुरू बिन मिटै न दोष।।
'यह तन विष की बेलरी, गुरू अमृत की खान।
शीश दियो जो गुरू मिले, तो भी सस्ता ज्ञान।।

सज्जनों साधु–संतों की संगति उन्हें अच्छी लगती थी। यद्यपि कबीर की निंदा करने वाले लोगों की संख्या कम नही थी। लेकिन कबीर निन्दा करने वाले लोगों को अपना हितैषी समझते थे–

'निन्दक नियरे राखिये, ऑगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।।

एक बार किसी ने बताया कि संत रामानन्द स्वामी ने सामाजिक कुरीतियों के खिलाप लड़ाई छेड़ रखी थी। कबीर उनसे मिलने

निकल पड़े किन्तु उनके आश्रम पॅहुचकर पता चला कि वे मुसलमानों से मिलते नही है। कबीर ने हार नही मानी और पंच गंगा घाट पर रात के अंतिम पहर पर पहुँच गये और सीढ़ी पर लेट गये। उन्हें पता था कि संत रामानन्द प्रातः गंगा स्नान को आते है। प्रातः जब स्वामी जी जैसे ही स्नान के लिए सीढ़ी उतर रहे थे उनका पैर कबीर के सीने से टकरा गया राम–राम कह कर स्वामी जी ने अपना पैर पीछे खींच लिया। तब कबीर ने खडे होकर उन्हें प्रणाम किया। संत रामानन्द ने पूछा आप कौन है? कबीर ने उत्तर दिया आपका शिष्य कबीर। संत ने पुनः कबीर से पूछा मैने कब आपको अपना शिष्य बनाया? कबीर ने विनम्रता से उत्तर दिया कि अभी–अभी जब आपने राम–राम कहा मैने उसे अपना गुरू मंत्रा बना लिया है। संत रामानन्द कबीर की विनम्रता से बडे ही प्रभावित हुए और उन्हें अपना शिष्य बना दिया। कबीर को स्वामी जी ने सभी संस्कारों का बोध कराया और ज्ञान की गंगा में डुबकी लगा दी। कबीर पर गुरू मंत्रा का रंग इस तरह चढ़ा कि उन्होंने गुरू के सम्मान में कहा है–

सब धरती कागद करू, लेखनी सब वनराज।
सात समुद्र की मसि करू, गुरू गुण लिखा नजाय।।

ये कहना अतिसयोक्ति नही है कि गुरू के महत्व का वर्णन कबीर दास जी ने अपने दोहों में पूरी आत्मियता से किया है। कबीर मुसलमान होते हुए भी मांस को कभी हाथ नही लगाया। कबीर जॉति–पॉति और ऊँच–नीच के बन्धनों से परे फक्कड़ अलमस्त और क्रांतिदर्शी थे। उन्होंने रमता जोगी और बहता पानी की कल्पना से साकार किया। कबीर का व्यक्तित्व अनुकरणीय है। वे हर तरह की कुरीतियों का विरोध करते थे। वे साधु संतों और सूफी फकीरों की संगत तो करते है लेकिन धर्म के ठेकेदारों से दूर रहते है कबीर का कहना है कि –

हिन्दू बरत एकादशी, साधे दूध सिंघाड़ा सेती।
अन्न को त्यागे मन को न हटके पारण करे सगौती।।
दिन को रोजा रहत है, राति हनत है गाय।
यहॉ खून वै वंदनी, क्यों कर खुशी खुदाय।।

जीव हिसां न करना और मांसाहार के पीछे कबीर का तर्क बहुत महत्वपूर्ण है। वे मानते है कि दया, हिंसा और प्रेम का मार्ग एक है। यदि हम किसी भी तरह की तृष्णा और लालसा पूरी करने की हिंसा करेंगें तो, घृणा और हिंसा का ही जन्म होगा। बेजुबान जानवर के प्रति या मानव का शोषण करने वाले व्यक्ति कबीर के लिए सदैव निंदनीय थे। कबीर सांसारिक जिम्मेदारियों से कभी दूर नही हुए। उन्होंने अपनी पत्नी, पुत्रा पुत्राी के साथ पारिवारिक रिश्तों को भली–भॉति निभाया। जीवन यापन हेतु ताउम्र अपना पैतृक कार्य अर्थात जुलाहे का काम करते रहे। कबीर की वाणी बहुरंगी है। कबीर ने किसी ग्रन्थ की रचना नही की। अपने को कवि घोषित करना भी उनका उद्देश्य नही था। उनकी मृत्यु के पश्चात उनके शिष्यों ने उनके उपदेशोंका संकलन किया जो 'बीजक' ग्रन्थ के नाम से जाना जाता है इस ग्रन्थ के तीन भाग है साखी, सबद और रमैनी। कबीर के उपदेशों में जीवन की दार्शनिकता की झलक दिखती है। गुरू–महिमा, ईश्वर–महिमा, सत्संग महिमा, माया के फेर आदि का सुन्दर वर्णन मिलता है। उनके काव्य में यमक, उत्प्रेक्षा, रूपक, अनुप्रास आदि अंलकारों का सुन्दर समावेश मिलता है। भाषा में सधी आवाज एवं सूत्रा होने के कारण कवि हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने 'कबीर' को भाषा का डिक्टेटर कहा है। कबीर की साखियों में सच्चे गुरू का ज्ञान मिलता है। कबीर के काव्य का सर्वाधिक महत्व धार्मिक एवं सामाजिक एकता और भक्ति का सन्देश देना है।

कबीर जी की मृत्यु भी जन्म की ही तरह रहस्यवादी है। आजीवन काशी में रहने के बावजूद अन्त समय 1518 ई. के करीब मगहर चले गये थे क्योंकि वे कुछ सामाजिक भ्रांतियों को दूर करना चाहते थे काशी के लिए कहा जाता था कि यहॉ पर मरने से स्वर्ग मिलता है तथा मगहर में मरने पर नरक की प्राप्ति होती है। उनकी पुण्य आत्मा को मगहर में भी मरने के पश्चात स्वर्ग की प्राप्ति हुई। उनकी मृत्यु के पश्चात हिन्दू और मुसलमानों में मत भेद हो गये थे। क्योंकि हिन्दू अपने धर्म के अनुसार उनका अंतिम संस्कार करना चाहते थे और मुसलमान अपने धर्म के अनुसार इस कारण विवाद की स्थिति पैदा हो गई थी। तत्पश्चात एक अजीब घटना घटी कि कबीर के पार्थिक शरीर से चादर हटाई गई तो वहॉ कुछ फूल पड़े मिले थे। जिन फूलों को दोनों समुदाय के लोगों ने आपस में बॉट लिया था।

कबीर की अहमियत और उनके महत्व को कवि जायसी ने अपनी रचना में बहुत ही अहमियतता से परिलक्षित किया है।

ना नारद तब रोई पुकारा, एक जुलाहे सौ मै हारा।
प्रेम तन्तु नित ताना तनाई, जप तप साधि सैकरा भराई।।

सारांश (परिशिष्ट) :–

कबीर दास जी निर्गुण संत कवि थे। धर्म के संबंध में उनकी धारणा बिल्कुल स्पष्ट थी। वे सच्चे संत थे। वे परमात्मा को एक मानते थे। हिन्दू और मुसलमान उनकी दृष्टि में एक ही ईश्वर की संतान है। इसलिए वे उनमें कोई भेद नही मानते है। धर्म के नाम पर किसी प्रकार के ढोंग या दिखावा की बात उन्हें गंवारा नही थी। उनका मानना था कि मनुष्य को परमात्मा की साधना करनी चाहिए। साक्षात्कार और दर्शन के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। बाहरी आडम्बरों में नही पड़ना चाहिए। वे साखी–सबद, गाने–दोहराने, तीर्थ–व्रत करने, स्नान ध्यान, छाप–तिलक, माला–टोपी आदि बाहरी प्रदर्शनों को व्यर्थ मानते थे। और उनसे दूर रहकर प्रभु भजन पर ध्यान देने की बात कहते थे। उनकी दृष्टि में मनुष्य के जीवन का लक्ष्य आत्मज्ञान प्राप्त करना था धर्म के नाम पर होने वाली हिंसा के भी वे प्रबल विरोधी थे। ये कहना अतिसयोक्ति नही होगा कि कबीर विचित्रा नही है। सामान्य है किन्तु इसी साधारणपन में अति विशिष्टता है। हिन्दी साहित्य के इतिहास में कबीर जैसा कोई व्यक्ति नही है। कबीर सत्य बोलने वाले निर्भीक व्यक्ति थे। वे कटु सत्य भी कहने में नही हिचकते थे। उनकी वाणी आज के भेदभाव भरे समाज में मानवीय एकता का रास्ता दिखाने में सक्षम है।

सन्दर्भ संकेत

1. कबीर ग्रंथावली (सटीक) राम किशोर शर्मा (हिन्दी विभाग इलाहाबाद) लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद
2. भारत के महान व्यक्तित्व राज इण्टर प्राइजेज, हल्द्वानी (नैनीताल)
3. कबीर ग्रन्थावली लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद पृष्ठ संख्या – 14, 514, 515, 612
4. हिन्दी सौरभ चित्रा प्रकाशन (इण्डिया) प्रा. लि. 312 वैस्टर्न कचहरी रोड मेरठ

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.org